मीना केशवर कमली

(1936-1987)



एक ऐसी दुनिया की कल्पना करें जहां पर महिलाओं और लड़कियों को स्कूल जाने से हतोत्साहित किया जाता हो - और लड़कियों को प्रवेश देने वाले स्कूलों को नियमित रूप से जला दिया जाता हो. आधुनिक अफगानिस्तान में, आज ऐसी ही दुनिया मौजूद है.

इस देश में मूल रूप से महिलाओं और लड़कियों के कोई मानवाधिकार नहीं है. स्कूल जाने से हतोत्साहित होने के अलावा, महिलाओं को अपने घरों के बाहर नौकरी करने से भी रोका जाता है. अफगानिस्तान में, महिलाओं वाले सभी घरों की खिड़कियां आमतौर पर काले रंग से रंगी होती हैं ताकि कोई अंदर न झांक सके. जब महिलाएं अपने घरों से बाहर निकलती हैं, तो उन्हें सिर से पैर तक एक काले या नीले कपड़े के "बुर्के" से खुद को ढंकना पड़ता है. उसमें सर का हुड भी शामिल होता है जो पूरी तरह से शरीर को ढकता है. हुड में बस सांस लेने और देखने के लिए कुछ छोटे छेद होते हैं. अगर कोई महिला बीमार हो, तो वो पुरुष डॉक्टर के पास नहीं जा सकती है. और चूंकि अफगानिस्तान में लगभग सभी डॉक्टर पुरुष हैं, इसका मतलब होता है कि महिलाएं आमतौर पर बीमार होने पर किसी डॉक्टर के पास नहीं जा सकती हैं.

इसके अतिरिक्त, अफगानी महिलाओं को आवाज़ करने वाले जूते या चमकीले रंग के जूते पहनने पर भी मनाही है. उन्हें किसी भी संगीत को सुनने से या उसे गाने से रोक जाता है. उन्हें टेलीविजन देखने या फिल्में देखने जाने से भी मना किया जाता है. उन्हें अपने नाखूनों को पेंट करने से भी रोका जाता है. उन्हें हंसने से भी मना किया जाता है. जो महिलायें ऐसा करती हैं उन्हें अक्सर पीटा जाता है, अपंग बनाया जाता है और फिर उनकी हत्या कर दी जाती है.

1990 के दशक से स्थिति बहुत खराब है जबसे "तालिबान" नामक कुछ हिंसक इस्लामी लोगों ने, सरकार की कमान संभाली है और उपरोक्त चीजों को गैरकानूनी घोषित कर दिया है. हालांकि तालिबान अब आधिकारिक तौर पर इंचार्ज नहीं हैं, और उनके कई अपमानजनक कानूनों को समाप्त कर दिया गया है, लेकिन वर्तमान सरकार ने महिलाओं और लड़कियों की सुरक्षा को सुधारने के लिए बहुत कम ही किया है.

हालाँकि अब आधिकारिक तौर पर लड़कियों को स्कूल जाने की अनुमति है, लेकिन तालिबान (जिसके पास अभी भी बहुत अधिक शक्ति है) लड़कियों के कई स्कूलों को नियमित रूप से अभी भी जला रहे हैं. कई शिक्षक, छात्र और माता-पिता तालिबान से इतने डरे हुए हैं कि वे इन स्कूलों को जलाए जाने का जोखिम उठाने की बजाय उन्हें पहले से ही बंद कर देते हैं.

1970 के दशक में, अफगानी महिलाओं को स्कूल जाने की अनुमति थी, और उन्हें सिर से पैर तक खुद को ढंकना भी नहीं पड़ता था. हालाँकि, उन्हें पुरुषों के समान अधिकार हासिल नहीं थे. इससे मीना केशवर कमल नाम की एक अफगानी महिला बहुत परेशान हुई. इसलिए, 1977 में, बीस साल की उम्र में, मीना ने अफगानिस्तान और पड़ोसी इस्लामिक देश पाकिस्तान में, महिलाओं की मदद के लिए एक संगठन शुरू किया. उन्होंने जिस संगठन की शुरुआत की उसे RAWA (रावा) या रेवोलुशनरी एसोसिएशन ऑफ़ द वीमेन ऑफ़ अफगानिस्तान, कहा जाता है. इसका उद्देश्य लड़कियों और महिलाओं को अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य की देखभाल प्रदान करना है. मीना को पता था कि अफ़ग़ानिस्तान जैसे देश में, महिलाओं की मदद करने का साहस करके वो अपनी जान को जोखिम में डाल रही थीं और अंतत: उन्हें इस काम के लिए अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी.

लेकिन 1987 में मीना की मौत के बाद भी RAWA (रावा) जिंदा है. आज भी RAWA (रावा) अफगानी और पाकिस्तानी महिलाओं और लड़कियों की शिक्षा और स्वास्थ्य की देखभाल प्रदान करता है - हालांकि वो सबकुछ गुप्त रूप से होता है. अफगानिस्तान में, अब दर्जनों गुप्त स्कूल और अनाथालय हैं, जो सभी लड़कियों के लिए हैं, जो RAWA सदस्यों के घरों में चलाए जाते हैं. ये शिक्षक, डॉक्टर और नर्स अपनी जान जोखिम में डालकर अफगानी महिलाओं और लड़कियों के बेहतर भविष्य के निर्माण के काम में लगे हैं.